बच्चो ! इनसे सीखो हरदम

सच्चिदानन्द सिन्हा

छायाचित्र एवं टिप्पण
रामकिशन 'अडिग'

बुलबुल

कालापन ले गहरा भूरा पर का होता रंग,
बुलबुल के गाने में रहती हरदम भरी उमंग।
है सफेद पूँछ के पीछे, लाल पेट के नीचे,
सिर पर छोटा ताज जिसे रहता आगे को खींचे।
नहीं चाहती केवल रहना हरियाली के पास,
काँटों भरी-झाड़ियों में भी बुलबुल करती वास।
दिन के ढल जाने पर भी हो मस्त सुनाती गाना,
जीवन की संध्या में भी है कहती खुशी मनाना।।

• प्रचलित नाम : बुलबुल, गुलदुम • जैविकी नाम : Pycnonotus Jocosus • हल्की झाड़ियों वाले जंगलों में तथा मनुष्यों की बस्तियों के आस-पास भी पाई जाती है।

चील

वायुयान-सा आसमान में चक्कर सदा लगाए,
ऊपर ऊपर उठता जाता डैने बिना हिलाए।
छोटी चोंच सफेद, पंख काला और भूरा,
क्षण में गया शिकार पड़ा चंगुल में पूरा।
कभी-कभी घोड़े-सा यह चिल्लाता शोर मचाता,
जोर-जोर से बोल और चीलों को पास बुलाता।
अथक उड़ान दिखाकर अपनी चील हमें बतलाता,
सतत यत्न में ही कोई जीवन का रहस्य है पाता।।

• प्रचलित नाम : चील • जैविकी नाम : Haliastur Indus • नदियों, तालाबों, खेतों के आस-पास पाई जाती है।

भुजंगा

काजल-सा है रंग, पूँछ मछली-सा पाया,
देख! भुजंगा ने छोटा हो कैसा रंग जमाया।
कौआ, चील और बाज सरीखे चिड़ियों के सरदार,
भागे दुम दबाये कोई सहे न इसकी मार।
वायुयान बमबाज सरीखे है पैंतरे बताता,
क्षण में जाता आसमान में क्षण में भू पर आता।
सफल साहसी सदा भुजंगा का है ऐसा कहना,
हिम्मत कर आफत से लड़ना, बच्चो कभी न डरना।।

• प्रचलित नाम : भुजंगा, कोतवाल • जैविकी नाम : Dicurus Adsimilis • खम्भों, खेतों, झाड़ियों की फुनगियों, टेलीफोन के तारों पर बैठे रहते हैं।

गिद्ध

तेज चोंच पतली गरदन बदसूरत काले,
गोल गगन में उड़ते रहते नजर भूमि पर डाले।
आसमान में दूर-दूर तक हैं आजाद विचरते,
मुर्दे अगर दिखें धरती पर दलबल लिए उतरते।
लोग गिद्ध को अशुभ मानते गिद्ध दृष्टि बदनाम,
सबक मिलेगा इससे बच्चों कारण लेना जान।
ऊँचा जो उठना हरदम आदर्श उच्चतर रखना,
नहीं व्योम में पहुँच गिद्ध-सा हेय लक्ष्य पर फँसना॥

• प्रचलित नाम : गिद्ध • जैविकी नाम : Gyps Bengalensis • जानवरों की लाशों के आस-पास झुण्ड में, गाँव या सड़क किनारे ऊँचे पेड़ों पर रहते हैं।

गौरैया

कत्थई रंग की रेखाएँ पाँखों पर, उजला पेट,
इसे अन्न से प्रेम, नहीं आता इसको आखेट।
निडर बड़ी है, आ जाती अक्सर मनुष्य के पास,
रहती वहीं, किया करते हैं जहाँ आदमी वास।
गौरैया की भी होती है बड़ी विचित्र उड़ान,
मानो उछले आसमान में, रुक-रुक कर आराम।
परख बड़ी है तेज अलग करती भूसे से दाना,
सीखो वैसे ही प्रलाप से तथ्य सदा छिटकाना।।

• प्रचलित नाम : गौरैया, चिड़ी • जैविकी नाम : Ploceidae • घरों, खेतों, गाँवों, शहरों में कहीं भी रह सकती है।

हुदहुद

हुदहुद के पंखों पर होती उजली काली धारी,
मुकुट बादामी से लगती है इसकी सूरत प्यारी।
चोंच नहरनी-सी पायी, मिट्टी में जिसे घुसाता,
कीड़ों के मिलने पर उनको मार तुरंत खा जाता।
मुकुट रंज होने पर है यह पंखे-सा फैलाता,
निडर बड़ा है बहुत पास तक है मनुष्य के आता।
है कृषकों का मित्र हानिकारक कीड़ों को खाता,
एक-दूसरे पर निर्भरता, जीवों की बतलाता।।

कबूतर

काले स्याह और सफेद, होते चितकबरे,
कुछ के हल्के रंग तथा औरों के गहरे।
उड़ते खूब और दूर-दूर तक चुगने को ये जाते,
कलाबाजियाँ आसमान में, इनमें कुछ दिखलाते।
घुटरूँ-घुटरूँ कर सकते बस नहीं जानते गाना,
घूम-घूम खेतों खलिहानों में चुगते हैं दाना।
जन्मजात गुण निज संख्या औरों को मिला बढ़ाना,
लेना सीख कबूतर से बच्चो तुम मित्र बनाना।।

कौआ

है मनुष्य का निकट पड़ोसी कौआ इसका नाम,
सुबह सबेरे आता है सबसे इसकी पहिचान।
बच्चे तेरी नींद नहीं जब उषा काल में जाती,
काँव-काँव कौए की बोली ही है तुम्हें जगाती।
हम आलस में खाना खाकर जूठन देते फेंक,
दाना-दाना करके कौआ लेता उसे समेट।
कौआ यह बतलाता कर आँगन की सदा सफाई,
छोटा काम नहीं कोई जिससे हो कहीं भलाई।।

कठफोड़वा
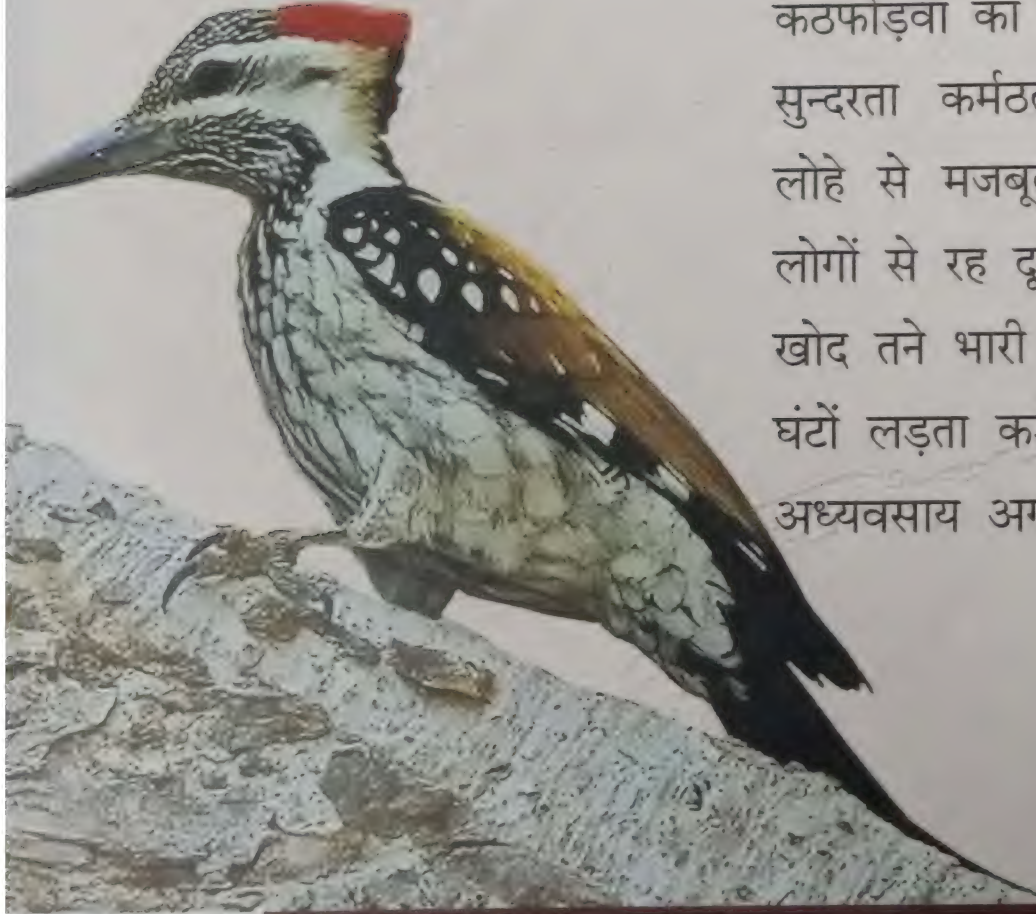
सुन्दर-सा सुकुमार जानकर मत कमजोर बताना,
कठफोड़वा का हाल नहीं बच्चो तुमने है जाना।
सुन्दरता कर्मठता दोनों साथ-साथ भी जाते,
लोहे से मजबूत चोंच है इसकी यही बताते।
लोगों से रह दूर काम में व्यस्त सदा है रहता,
खोद तने भारी पेड़ों के कीट पकड़ जी भरता।
घंटों लड़ता कड़े काठ से शक्ति लगाता सारी,
अध्यवसाय अगर हो, कोई काम नहीं है भारी।।

• प्रचलित नाम : कठफोड़वा, खातीचिड़ा • जैविकी नाम : Picoides Mahrattensis • पतझड़ वाले जंगलों, आमों के बागों तथा पेड़दार अर्द्ध-रेगिस्तानी इलाकों में पाया जाता है।

खंजन

चमकदार उजले पाँखों पर काली धारी,
खंजन की सूरत सबको लगती है प्यारी।
छोटा बदन, पूँछ लम्बी है जिसको सदा हिलाता,
चाल बहुत सुन्दर है चलने में कमाल दिखलाता।
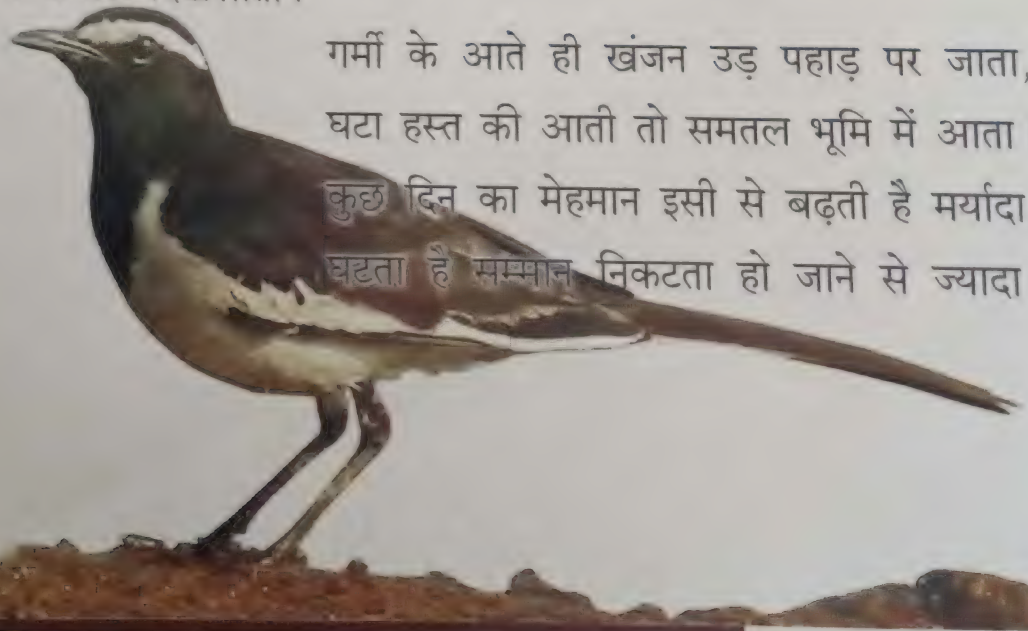
गर्मी के आते ही खंजन उड़ पहाड़ पर जाता,
घटा हस्त की आती तो समतल भूमि में आता।
कुछ दिन का मेहमान इसी से बढ़ती है मर्यादा,
घटता है सम्मान निकटता हो जाने से ज्यादा।

• प्रचलित नाम : धोबन, खंजन • जैविकी नाम : Motacilla Alba • पत्तीदार पेड़ों पर घर बनाता है तथा नदियों, नालों, सड़कों तथा जंगली रास्तों के आस-पास रहता है।

कोयल

कोयल का भी रंग काग-सा होता काला,
आँखें लाल, बदन कुछ छोटा, जान निराला।
कौए के खोते में कोयल अण्डा है दे देती,
और फोड़ कौए के अण्डे को है वह पी लेती।
कौआ नहीं समझ पाता है कोयल की यह चाल,
बच्चा बड़ा हुआ तो कोयल लेती उसे निकाल।
एक पाठ कोयल की जनप्रियता से बच्चो ले लो,
तीखापन मन से निकाल कर मीठी बोली बोलो।।
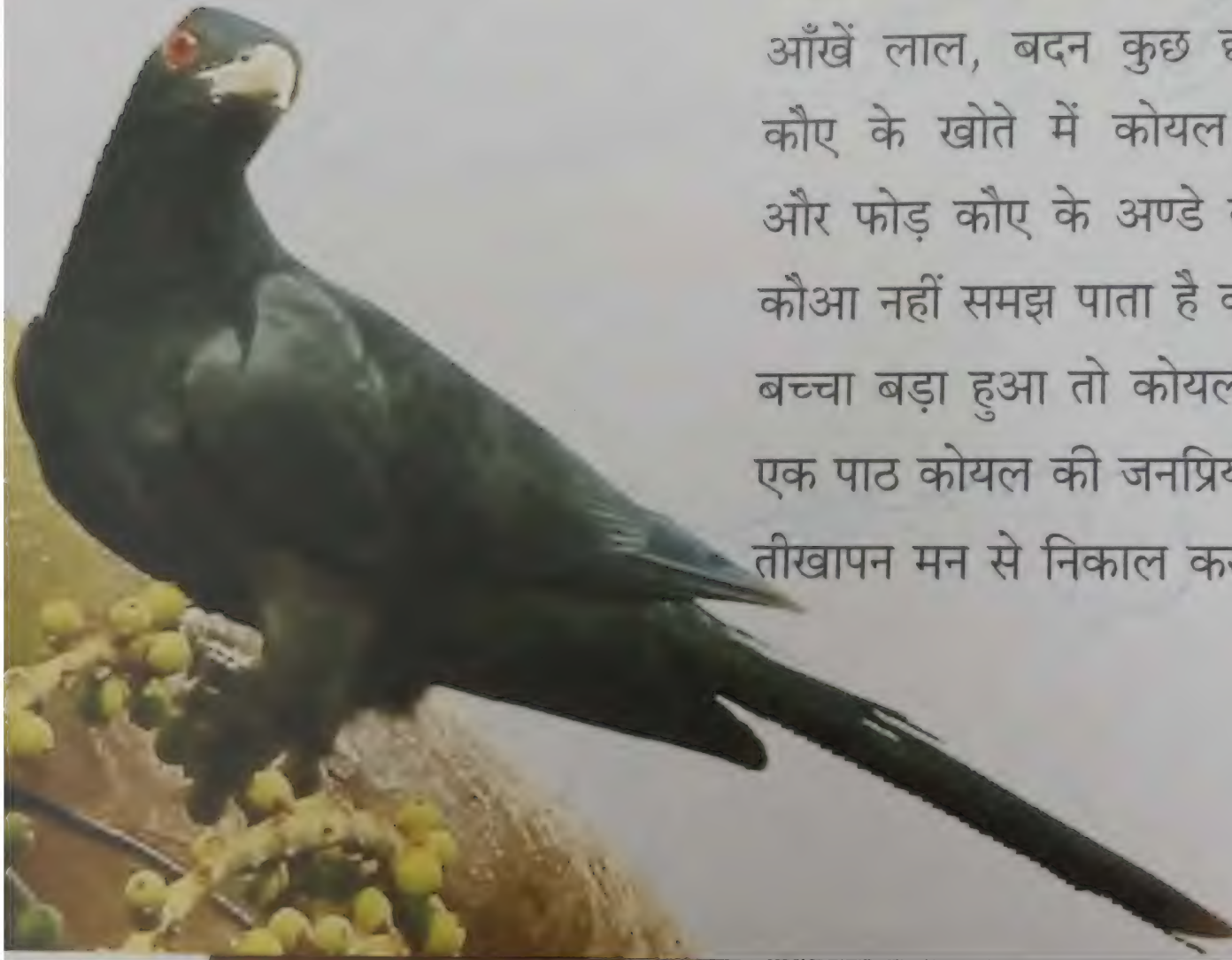
मछलीमार

राजा मछलीमार टिटिहरी का है होता भाई,
नदी किनारे जाकर इसकी देखो हाथ सफाई।
आसमान का जीव मगर पानी का गोतामार,
मछली देख लगाता गोते खाली जाय न वार।
आसमान का रंग चुराकर नीले पंख बनाया,
पा भारत की सुन्दर वायु नीलम-सा चमकाया।
लम्बी चोंच इसे कर देती है थोड़ा बेडौल,
लेकिन उपयोगिता बना देती सबको सुडौल।।
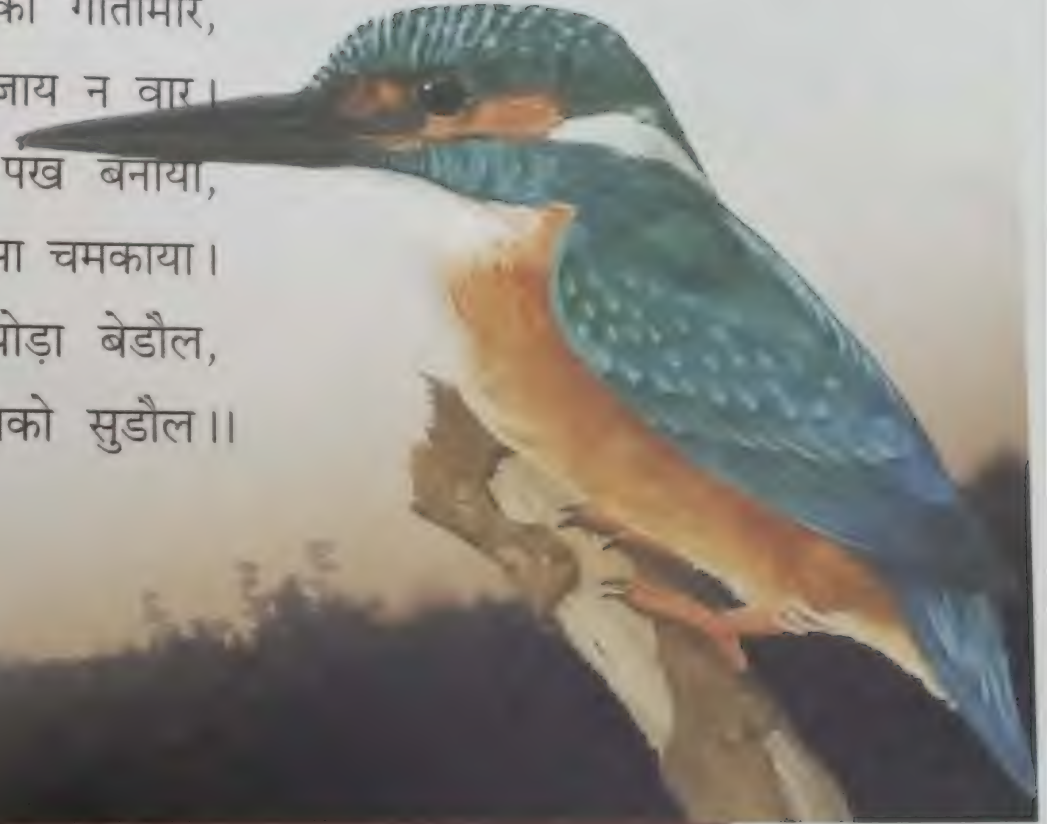
• प्रचलित नाम : मछलीमार, शरीफन या छोटा किलकिला • जैविकी नाम : Alcedo Atthis • प्रायः किसी तालाब या सोते के ऊपर झुकी डाल पर अकेला बैठा रहता है। पानी के ऊपर नजदीक से उड़ता रहता है।

महलाठ

सिर काला, गरदन काली, पर का बादामी रंग,
करता है सब चिड़ियों को महलाठ हमेशा तंग।
धारीदार पूँछ लम्बी पा लगता बड़ा सुहाना,
लेकिन इसका काम चुरा औरों के अण्डे खाना।
छिपकलियों को खाने पर यह छप्पर तक में घुस आता,
कभी 'काकुली' बोल बोल कर हल्ला खूब मचाता।
चोरी में संलग्न सदा पर सुन्दर रूप अनोखा,
तड़क-भड़क पर जो भूलें, खाते हैं जग में धोखा।।

महोख

काला रंग बदन का सारे कत्थी रंग के पाँख,
पूँछ जरा लम्बी-चौड़ी है लाल रंग की आँख।
कोयल की जो जाति, उसी में है महोख भी आता,
बोली तो है तेज मगर यह गाना नहीं सुनाता।
पेड़ और पत्तों के कीड़े चुन-चुन कर यह खाता,
देख आदमी को झाड़ी झुरमुट में झट छिप जाता।
खूब सबेरे मुर्गे जैसा है यह हमें जगाता,
भली भलाई है परोक्ष की ओझल रह बतलाता।

• प्रचलित नाम : महोख, महोका, कूका • जैविकी नाम : Centropus Sinensis • मनुष्य के निवास स्थानों के पास, बागों में प्रायः जमीन पर ही विचरण करता रहता है।
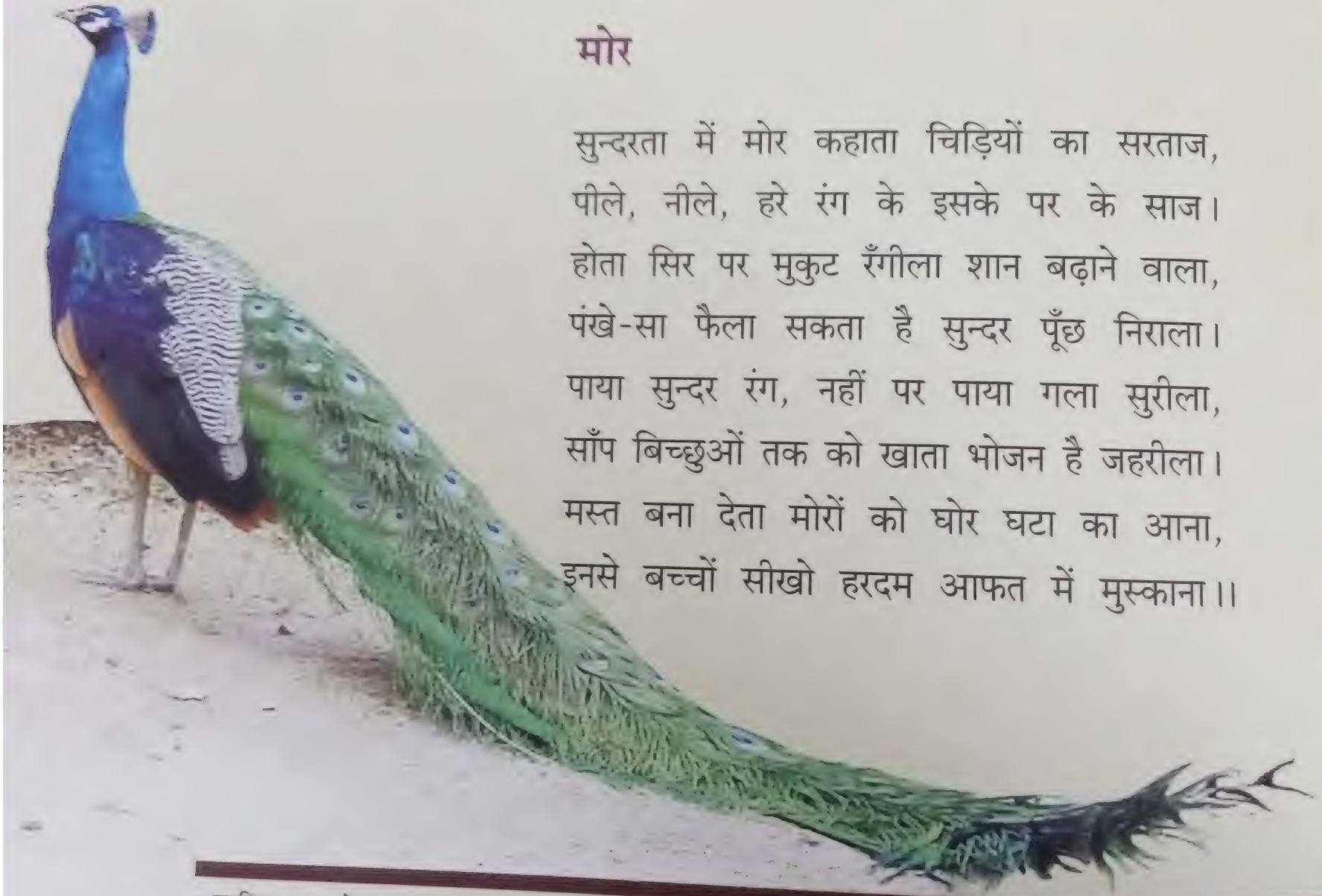
मोर

सुन्दरता में मोर कहाता चिड़ियों का सरताज,
पीले, नीले, हरे रंग के इसके पर के साज।
होता सिर पर मुकुट रँगीला शान बढ़ाने वाला,
पंखे-सा फैला सकता है सुन्दर पूँछ निराला।
पाया सुन्दर रंग, नहीं पर पाया गला सुरीला,
साँप बिच्छुओं तक को खाता भोजन है जहरीला।
मस्त बना देता मोरों को घोर घटा का आना,
इनसे बच्चों सीखो हरदम आफत में मुस्काना।।

• प्रचलित नाम : मोर, मयूर • जैविकी नाम : Pavo Cristatus • जंगलों में, गाँवों में तथा खेतों व मैदानों में रहते हैं। रात को पेड़ों पर ऊँचे बैठकर सोते हैं।

मुर्गा

लाल चाम चोंच पर रहता गहने-सा लटकाए,
रंगबिरंगे पर पा मुर्गा सबके मन को भाए।
पंख बहुत छोटे होने से नहीं कभी उड़ पाता,
इन्हें फड़फड़ा उछल भूमि से अपनी जान बचाता।
लोग पालते मुर्गे को और उसे खिलाते दाना,
अण्डे देकर के मुर्गी देती है पौष्टिक खाना।
प्रातःकाल बाँग दे मुर्गे हमको याद दिलाते,
उठो समय है बीत रहा रह जाओगे पछताते।।

• प्रचलित नाम : मुर्गा • जैविकी नाम : Gallus Sonneratii • छोटी झाड़ियों, झुरमुटों व उजड़े बागानों में रहना पसन्द करता है।

मैना

कत्थी और कालापन ले होता मैना का रंग,
भारत भर में होता है लोगों को इसका संग।
पीली चोंच, पीली रेखा आँखों के चारों ओर,
पँखों के नीचे सफेद चाँदी-सी चौड़ी डोर।
छोटी होकर भी होती चिड़ियों की पहरेदार,
शोर मचाती खतरे में, सब होते हैं होशियार।
मैना यह दुनिया भर को देती अपना पैगाम,
छोटा होकर भी आना हरदम औरों के काम।।

• प्रचलित नाम : मैना, गुरसली • जैविकी नाम : Acridotheres Tristis • मिलनसार और खुशमिजाज यह पक्षी घरों, बाजारों, सड़कों के किनारे, गाय, कबूतर, गौरैया आदि के साथ पाया जाता है।

नीलकंठ

बादामी गरदन के ऊपर, नीला चारों ओर,
खूब मचाते रहते हरदम आसमान में शोर।
तरह-तरह के नील रंग में डैने बड़े छबीले,
मारपीट में तेज, और हैं चिड़ियों में रोबीले।
नीलकंठ शंकर कहलाते किया हलाहल पान,
नीलकंठ पा नील कंठ भी पाता है सम्मान।
नीलकंठ की बढ़ी प्रतिष्ठा से लो बच्चों जान,
महापुरुष का कोई भी गुण पाने में है मान।।
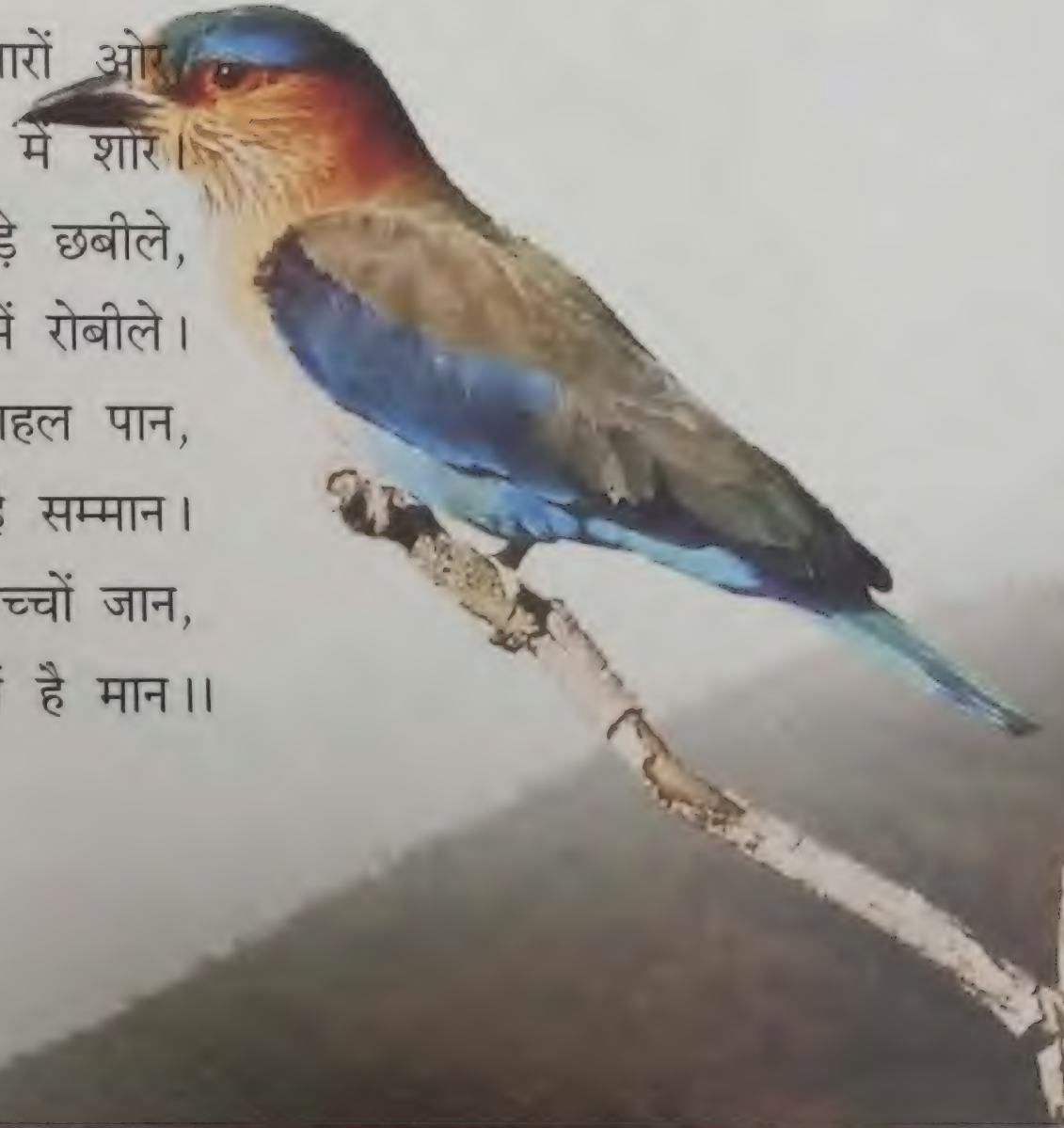
पंडुक

रंग राख-सा होता इसका उस पर हल्का लाल,
सभी शिकारी जीव हुआ करते पंडुक के काल।
घुँटरू-घूँ सबकी परिचित होती इसकी आवाज,
छोटी होती चोंच कि जिससे चुगता सदा अनाज।
उड़ने में है तेज मगर है मार-पीट से डरता,
रक्षा में असमर्थ इसी से सबके हाथों मरता।
रक्तिम प्रकृति के प्रांगण में निर्बल का है नाश,
विजयी वही हुआ करता है छल-बल जिसके पास।।
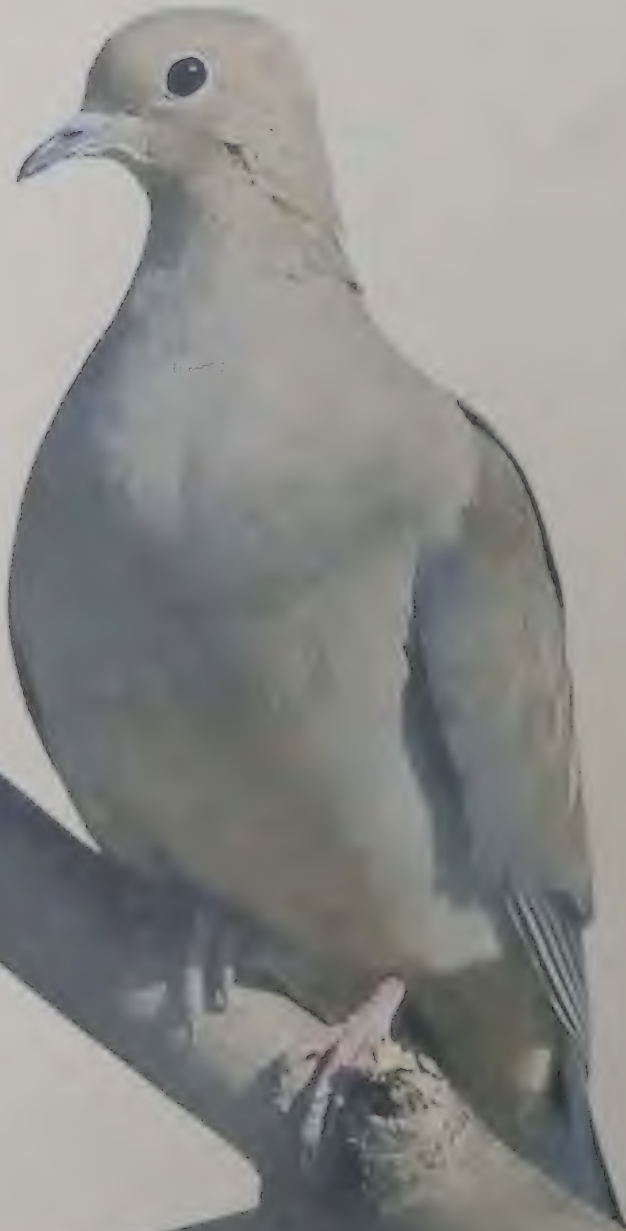
पनमुर्गी

मुर्गी जैसी ही पनमुर्गी को भी मिली बनावट,
झाड़ी झुरमुट में रहती है देख जलाशय का तट।
हरे, जरा पीलापन लेकर चोंच और हैं पैर,
जल-थल दोनों पर कर सकती खूब मजे में सैर।
छाती पेट सफेद, पंख है काला पाया,
छिप जाती झाड़ी में कोई पास जो आया।
जल-थल दोनों से रखती है अपना सहज लगाव,
जीवन में रखना सिखलाती है सबको समभाव।।

पपीहा
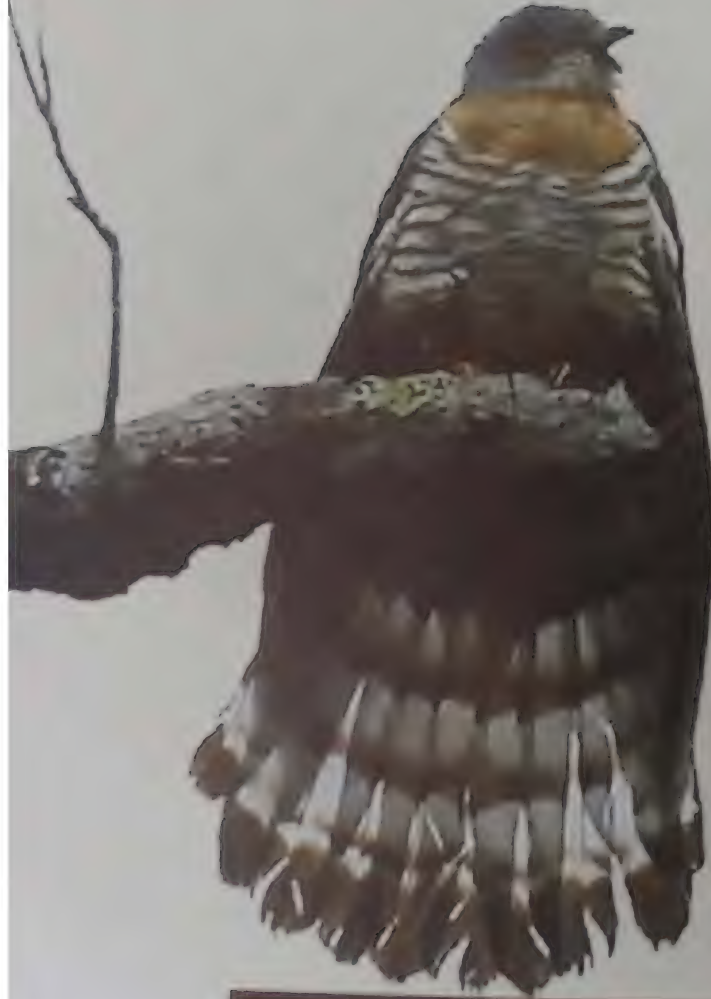
काले होते पंख और सिर पर है इसके चोटी,
बाज सरीखी चीतल भी इसकी जाती है होती।
पैजामे से रोयें रहते हैं पाँवों को घेरे,
भोजन में इसको मिल जाते हैं कीड़े बहुतेरे।
शुरू वसंत हुआ जबसे जब तक बीते बरसात,
पपीहा के पी पी रट से उठता गूँज प्रभात।
बूँदें खोजता स्वाति की सब कहते यही कहानी,
निज भावों में लोग रँगा करते जग को मनमानी।।

• प्रचलित नाम : पपीहा • जैविकी नाम : Hierococcyx Varius • जंगली इलाकों में पाया जाता है।

फूलसूँघा

चमकीला गहरा नीला है फूलसूँघा का रंग,
इसका सुन्दर रूप देख सब रह जाते हैं दंग।
होता छोटा बहुत और है बोली बड़ी सुरीली,
सदा फुदकता फूलों पर जैसे तितली गर्वीली।
भौंरे-सा यह फूल-फूल में अपनी चोंच घुसाता,
लेकिन रस प्रिय नहीं इसे, यह कीट पकड़ कर खाता।
फूलों के संग रहने भर से फूलसूँघा है नाम,
कर्म बिना इज्जत मिलना है संगति का परिणाम।।
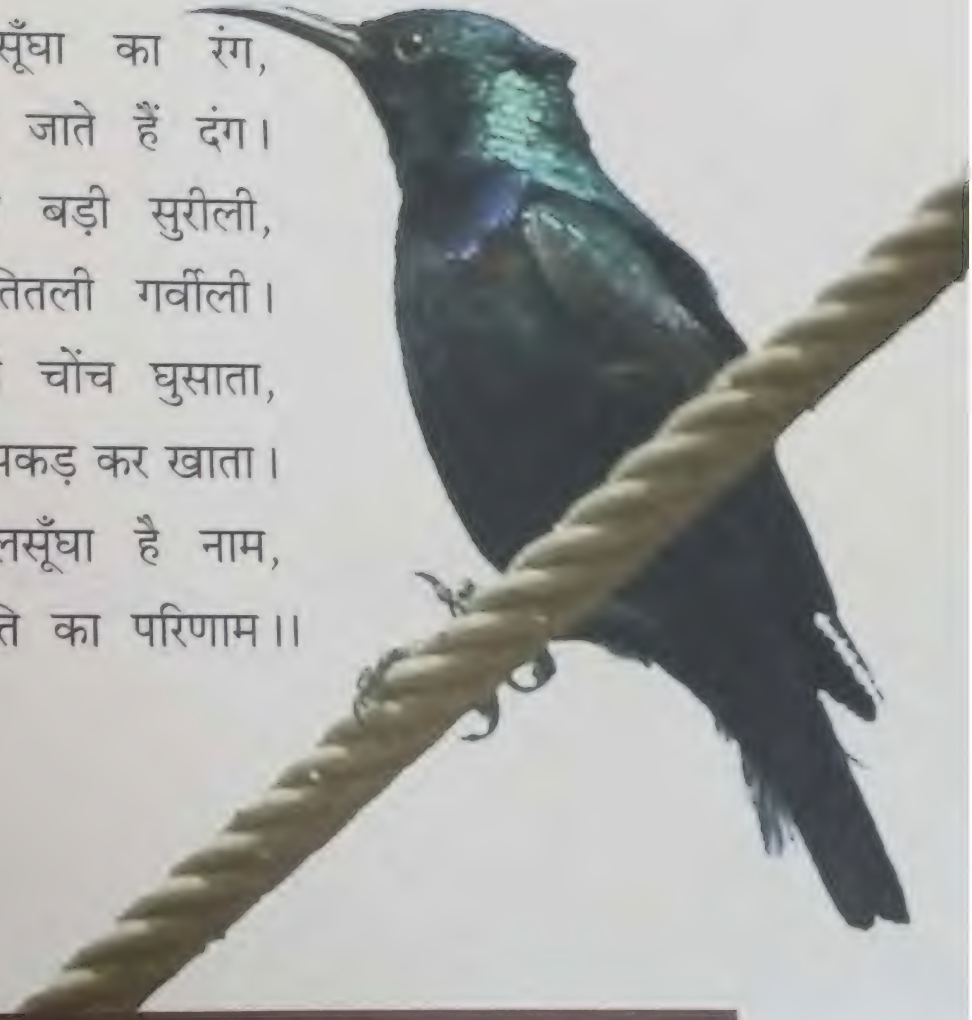
• प्रचलित नाम : फूलसूँघा, शकरखोरा • जैविकी नाम : Nectarinia Asiatica • जहाँ फूल मिलें किसी भी स्थिति में चिपके रहते हैं। अकसर जाड़ों में एक फूल से दूसरे फूल पर भागते रहते हैं।

सतभइया

मटमैला है रंग, चोंच पीली बादामी,
सतभइयों का साथ आपसी होता नामी।
जहाँ कहीं भी जाना होता एक साथ ही जाते,
थुथने चला-चला सूअर-सा अपना भोजन पाते।
व्यस्त काम में रहने पर भी है यह शोर मचाता,
बोली मधुर मिली है इससे गाना मन को भाता।
याद हमेशा रखना यह है सतभइयों का कहना,
उनके जैसा ही बच्चो आपस में मिलकर रहना।।

• प्रचलित नाम : सतभैया, सातभाई, घोंघई • जैविकी नाम : Turdoides Striatus • झुण्ड में जंगली बागों, अहातों और पेड़ों के कुंजों में रहते हैं।

तीतर

चीतल होता रंग, गले पर कत्थी रंग की धारी,
पंख बहुत छोटे होते हैं, देह मगर है भारी।
उड़ने में जल्दी थकता पर दौड़ लगाता तेज,
जंगल झाड़ी छोड़ निकलने से रखता परहेज।
बड़ी दूर तक सुन सकते हैं हम इसकी आवाज,
पेट भरा करता है खाकर कीड़े और अनाज।
करता घोर युद्ध आपस में लोग देखते खेल,
तीतर की यह दशा देख कर सीखो रखना मेल।।

• प्रचलित नाम : तीतर • जैविकी नाम : Francolinus Pondicerianus • गाँवों और खेतों के आस-पास पाया जाता है। यह खुश्क मैदानों का पक्षी है।

टिटिहरी

गहरा सलेटी रंग पाँख का, गले में धारी काली,
लम्बे होते पैर, चोंच नारंगी लेकर लाली।
टी-टी है आवाज, टिटिहरी है इससे कहलाता,
पास जलाशय के रहना है इसके मन को भाता।
सदा हवा में पानी के ऊपर रहता मँडराता,
जल के कीड़े छोटी मछली पकड़-पकड़ कर खाता।
खेतों में अण्डे इसका देना हमको सिखलाता,
कहीं रहो पर अपनी धरती से मत तोड़ो नाता।।

• प्रचलित नाम : टिटिहरी • जैविकी नाम : Vanellus Indicus • प्रायः नमी वाले इलाकों—ताल-तलैया, पोखर के आस-पास दिखाई देती है। खेत व चरागाह भी इसके वास-स्थल हैं।

उल्लू

मटमैला है रंग और कुछ हल्का पीला,
आँखें बड़ी गोल होती हैं, पंजा बड़ा नुकीला।
दिन भर पत्तों की छाया में लेता है विश्राम,
अंधियारा होने पर करता है शिकार का काम।
अंधकार अज्ञान, ज्ञान ज्योतिर्मय है कहलाता,
अंधकार में रहने से उल्लू मूरख कहलाता।
इसीलिए उल्लू कहने से होता है अपमान,
अगर प्रतिष्ठा पाना चाहो हासिल कर लो ज्ञान।।

• प्रचलित नाम : उल्लू, खुसटिया, चुगद • जैविकी नाम : Athene brama • पुराने आम, बरगद जिनमें छेद या कोटर हो, घुसा रहता है। मकानों में भी अकसर पाया जाता है।

तोता

हरे रंग और लाल चोंच में तोता बड़ा सुहाना,
रंग-बिरंगे फूल-फलहरी होते इसके दाना।
चुगने को जो कभी निकलता भारी झुंड बनाता,
खेतों में आगमन हुआ तो अन्न नष्ट हो जाता।
लोग पालते तोते को कहवाते इससे राम,
मगर कहाँ उड़ने वाले को पिंजड़े में आराम।
सीख आदमी की बोली यों होता यह हैरान,
पराधीनता नकल-नवीसी का होता परिणाम।।

बगुला

रंग उजला, लंबी गरदन, लंबे होते हैं पैर,
छोटी मछली से होता है इसका भारी वैर।
काले या पीले रंग की होती है इसकी चोंच,
मछली पास अगर आई तो लेते उन्हें दबोच।
सदा घूमते रहते हैं छिछले पानी के पास,
पेड़ सूख जाता है जिस पर होता इनका वास।
घण्टों पानी में रहता है धर मछली पर ध्यान,
बगुला से तुम करना सीखो एक चित्त हो काम।।

• प्रचलित नाम : बगुला • जैविकी नाम : Bublcus Ibis • कहीं भी पाया जा सकता है। पानी के नजदीक झुण्ड या अकेले में पाया जाता है।

सच्चिदानन्द सिन्हा

छात्र-जीवन से ही समाजवादी गतिविधियों से जुड़े श्री सिन्हा की समाज-चिन्तन की कई पुस्तकें हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित हैं। बच्चों के लिए यह उनकी पहली कविता पुस्तक है। वर्तमान में वे ग्राम मनिका, जिला मुजफ्फरपुर (बिहार) में रहते हैं।

रामकिशन अडिग

मूलतः चित्रकार-मूर्तिकार श्री अडिग ललित कला (मूर्ति) में स्नातक हैं। किशोरों के लिए दो पुस्तकें—'दुनिया चित्रकला की' तथा 'दुनिया संगीत की'—प्रकाशित। वर्तमान में वे राजस्थान के चूरू जिले के रतनगढ़ कस्बे में रहते हैं।

ISBN 81-89305-16-6

बच्चो ! इनसे सीखो हरदम
सच्चिदानन्द सिन्हा